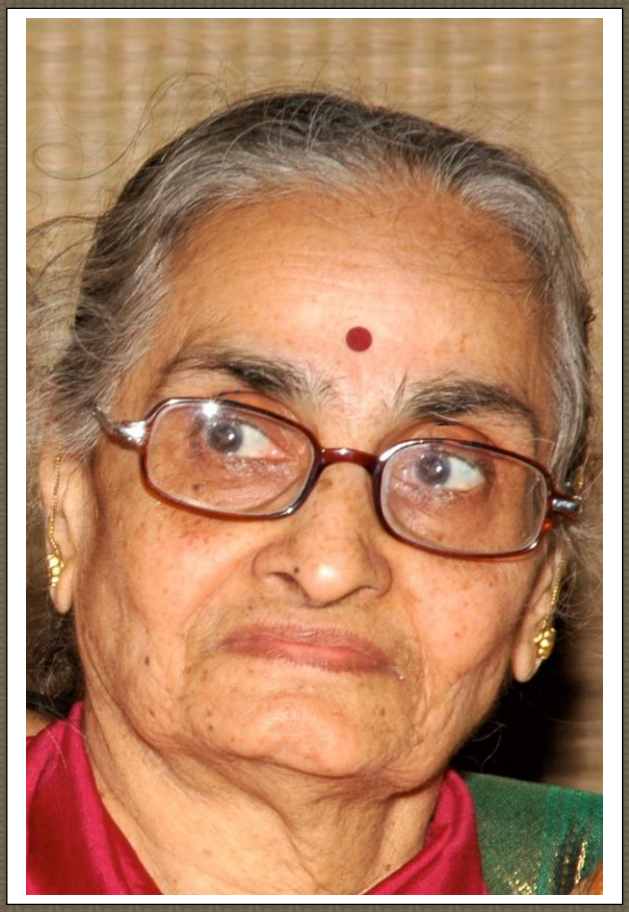

कमला राधाकृष्ण

{1931 से 1948}

श्रीमती कमलम्मा राधाकृष्ण की निज़ामाबाद से सेवाग्राम तक की जीवन यात्रा

भाग -1

मेरी अम्मा, मेरी गुरू, सखी , बहन, टीचर और मेंटर को सादर समर्पित !

लेखिका और बेटी डॉ. शोभना राधाकृष्ण

जगन्माता अनुराधा

भाग -1

अनुराधा नक्षत्र था जब जन्म हुआ था आदिलाबाद डिस्ट्रिक्ट के निर्मल में !

अपने माँ पिता की तीसरी संतान थी मेरी अम्मा - बुक्कपट्नम कमला ।

बचपन से ही शांत स्वभाव पर बहुत गहरे विचारों की समझ रखती थी । पिता बुक्कपट्टनम दीक्षाचारी की लाड़ली बेटी हमेशा उनके अस्पताल में मंडराती । बड़े बड़े जार में कारमिनेटिव मिक्श्चर (वातहर मिश्रण) भरा रहता जिसे, वो गटागट पी जाती और दूसरों को भी पिलाती थी ।

बड़े भाई बुक्कपट्टनम वेणुगोपाल तो जिगरी दोस्त था , दो साल ही तो बड़ा था। साथ साथ हनुमान व्यायाम शाला जाना और खूब कसरत करना उसे भाता था । वेणु तो मल्ल युद्ध , तलवार बाज़ी, मुद्गर चलाना और कुश्ती करता था । कमला सारे व्यायाम करती और खूब गुलाटी लगाती थी । दोनों का शरीर गठीला था और भाई खूब दौड़ाता था।

स्कूल दूर था पर जब छोटे थे तो आसिगाडू और ऊसिगाडू के कंधों पर बैठकर ठाठ से पहुँच जाते थे । हमेशा छाया के जैसे दो अर्दली साथ आते जाते और हर ज़रूरत का ख़्याल रखते। डॉकदर साहेब के बच्चे जो थे । जहां जहां तबादला होता , वहीं पर बड़ा घर होता । बाग में खेती की जाती थी और गायें हमेशा बंधती थी । बड़ा परिवार था ।

दीक्षाचारी ने बहुत मेहनत करके पढ़ाई की थी । बड़े भाई तातायार खुद तो वकील बने पर छोटे भाई की शिक्षकों प्रति उदासीन थे । सबका मानना था कि दीक्षा पढ़ लेगा तो उसकी बराबरी करना मुश्किल हो जायेगा । तो कोशिश यही रहती थी कि इस भाई को मौक़ा ही न दिया जाये ।

पर हर शाम को जो बच्चे पढ़ते थे उनका ही सुन सुन कर दीक्षा बहुत कुछ जान गया। पढ़ने की उत्कंठ इच्छा तो खूब थी लेकिन पैसे तो थे ही नहीं । इसी प्रकार सुन सुन कर , शाम के धुधंले में स्ट्रीट लाइटों के धीमी रोशनी में मेडिकल की पढ़ाई कर संस्कृत में कर ली । परीक्षा दी तो पास हो गये । मौखिक परीक्षा भी संस्कृत में ही दी ।

इस प्रकार डॉक्टर की प्यारी बेटी कमला बचपन से ही डॉक्टर बनना चाहती थी । डॉक्टर की बेटी जो थी !

भाग -2 बचपन और शिक्षा

ब्राह्मण परिवार में जन्म लिया था कमला ने । हिंदू समाज में बहुत सारी जातियाँ और संप्रदाय हैं ।ब्राह्मण समाज के बारे में जो पता चलता है कि जातियाँ पहले गुणों और कार्यों पर आधारित थीं ।सत्व - शुद्ध, रजस- ताकतवर और तमस्- सुस्त । जो इसी आधार पर चार भागों में विभक्त हुईं । ब्राह्मण (पढ़ाकू) क्षत्रिय (लड़ाकू) वैश्य (व्यापारी) और शुद्र (सेवा कार्यरत) ।

बाद में बहुत बदलाव आए , संस्कार बदले और हर जाति बहुत सारे भागों में विभक्त हो गयी । इसी प्रकार देश, स्थान, काल,और लोगों की वजह से ब्राह्मण समाज भी बहुत सारे संप्रदायों में बंट गया ।दक्षिण भारत में बौद्ध धर्म और जैन धर्मों के असर का प्रभाव कम होने के बाद शंकराचार्य, माधवाचार्यऔर रामानुजाचार्य ने हिदु धर्म को पुन: स्थापित किया । उसी आधार पर ब्राह्मण समाज के कई शाखायें उभर कर आईं जो क्रमश: अद्वैत, द्वैत और विशिष्टाद्वैत के नाम से जानी गईं । उन के माननेवाले विष्णु, शिव और शक्ति के पूजक बने।

माद्ध्व और श्री वैष्णव विष्णु के उपासक हैं , स्मार्थ शिव के उपासक हैं । दक्षिण भारत के उत्तरार्ध के श्रीवैष्णव संप्रदाय के लोग 'वडहलै' और दक्षिणार्ध के लोग ''तेंगलै' कहलाने लगे । काल प्रवाह के साथ उनमें से कुछ विद्वान आचार्य , पुजारी , मठाधीश और कुछ राजगुरू बने , जिन्हें 'नियोगी ' के नाम से पुकारा जाने लगा ।सब 'वैदिक' के नाम से जाने गये ।

कमला का परिवार वडहलै ब्राह्मण संप्रदाय का है जो विद्वत्ता के लिये जाना जाता है 17वीं और 18वीं शताब्दी में पेशवा साम्राज्य के समय उनके पूर्वजों ने जो साहित्य लिखा है वह तमिलनाडु के संग्रहालय की सामग्रीयों में सुरक्षित है । उसी समय के प्रचंड विद्वान किरीट वेंकटाचार्य कमला के पूर्वज थे । आज भी बहुत सारे विद्वान् व विदुषियाँ तेलुगू भाषी क्षेत्रों में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं ।।

पिछले पाँच - दस दशक में संरक्षण के अभाव में विद्वान जन फल फूलनहीं पाये थे। पर भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान के जनक स्वामी विवेकानंद, राजा राममोहन राय आदि के वजह से तिरुमालारामचंद्र, पुट्टपर्ती नारायणाचारी और राल्लपल्ली अनंतकृष्ण शर्मा (पिताजी राधाकृष्णन के ताऊजी) ने फिर से साहित्य , संगीत, कला इत्यादि में बड़े बड़े मानदंड स्थापित किया।

ऐसे श्री वैष्णव संप्रदाय में कमला के माताजी पद्मा जी के रिश्तेदारों ने अपनी प्रतिभा से पढ़ लिख कर ब्रिटिश और निज़ामशाही में सरकारी नौकरी की ।पर कमला के पिताजी डॉ बुक्कपट्टनम दीक्षाचारी के परिवार जनों ने अपने ब्राह्मण कुल की परंपरा निभाई । लेकिन पिताजी के भाइयों ने मदरसे में उर्दू और फ़ारसी में शिक्षा प्राप्त की और उर्दू सिस्टम में ही सरकारी नौकरी प्राप्त की ।

भाग -3

कमला के पिताजी दीक्षाचारी ने परम्परागत घर में ही संस्कृत साहित्य का अध्ययन आरम्भ किया । साथ ही मदरसे में उर्दू मीडीयम में भी पढ़ाई होने लगी । मदरसा में सबेरे 9 बजे से दोपहर 4 बजे तक होता था । दीक्षा को इस प्रकार के बंधन पसंद नहीं था । वह तो फक्कड़ , अलमस्त , घुमंतू पुरुष था । घर में बड़ों की खूब डाँट सुननी पड़ती थी जो उसको बिल्कुल असहनीय थी । यह भी कोई ज़िंदगी है ? मेरा तो भविष्य ही अंधकरमय है ऐसे मन में समझ लिया दीक्षा ने ।

माँ 'लक्ष्मीदेवी' के पास जाकर कुछ रुपए माँगे और कहा की तभी मुहं दिखाऊँगा जब कुछ बन जाऊँगा । पिता अन्नयचरलू से यह सब कुछ कहने की ज़रूरत नहीं समझी । सूरपुरम का घर छोड़ चला आया हैदराबाद । सूरपुरम में बहुत ज़मीनें और पार्पर्टी थीं । घर परिवार भरा पूरा था ।

दो बड़े भाई श्रीनिवासाचारलू और तातचरलू और एक छोटा भाई सीतारामाचारलु थे । नौ बहनें थीं - पेद्द सीतम्मा , जानकम्मा , वेंकटलक्षम्मा , लचम्मा , चिन्न सीतम्मा , बंगारम्मा , अलमेलम्मा और सुभद्रम्मा ।

सारी भरी जवानी में हीं विधवा हों गईं थीं और साथ में ही रहतीं थीं । घर की सारी की सारी महिलायें बहादुर , निड़र, मेहनती , आत्माभिमानी , ताकतवर और सर्वगुण संपन्न थीं । खेती का पूरी ज़िम्मेदारी

निभाती थी जानकम्मा । घोड़े पर सवार होकर सैंकड़ों एकर खेती की निगरानी रखना , इमली और आम के बाग़ानों की देख रेख सब अपने कुशल नेतृत्व में ले लिया था । क्या लगतीं होगीं वो , लंबी सी सुंदरी महिला , लाँग वाली साड़ी में घुड़सवारी करती हवा के वेग में घोड़ा भगाती तो टाप से ही पता चल जाता था कि एक सर्वगुण संपन्न महिला का निरीक्षण चल रहा है ।

बाक़ी 4 बहनों के पास 3-4 बच्चों की परवरिश की एकल ज़िम्मेदारी थी । अलमेलम्मा , लचम्मा , चिन्नसीतम्मा पर पड़ा था खाना बनाना और माँ की प्रसूति और देखभाल और घर चलाने की ज़िम्मेदारी । सारा राज महिलाओं का ही था ।

कमला भी ऐसी ही बहादुर , निड़र, मेहनती , आत्माभिमानी , ताकतवर और सर्वगुण संपन्न थीं । बाक़ी बहनें शकुंतला, सुलोचना और वसुंधरा भी कमला के जैसी ही सर्वगुण संपन्न और हमारी तेलुगू भाषा में कहूँ तो 'गेट्टिवांळू ' थीं ।

जब दीक्षा हैदराबाद पहुँचा तो एक विद्यालय में दाख़िला लिया और 'हफ्तम् 'यानी सातवीं जमात पास करके मेडिकल स्कूल में दाख़िला लिया । वह स्कूल मद्रास मेडिकल कालेज से एफिलियेटेड (संलग्न) था।

भाग -4

मद्रास स्कूल में डाक्टरी पढ़ने के लिये दाख़िला लेकर जब दीक्षा घर लौटा और माँ ने जब अपने बेटे का मुँह देखा तो बड़ी ख़ुश हुई । दीक्षा कोर्स कर ही रहा था कि पिता जी ने सुदंरी कन्या 'पद्मावती' से उनका विवाह कर दिया । गाय जैसी सीधी, धार्मिक , मंगलकारिणी , सुशील और गुणवती बहू को पा कर सास बहुत खुश हो गई । दीक्षा ने कुछ बरस तो इधर उधर घूमने में बिता दिये थे जिसकी वजह से 25 वर्ष की आयु में डाक्टरी की पढ़ाई ख़त्म की और LMP (Licentiate Medical Practitioner) की डिग्री हासिल की ।

काम करते करते होमियोपैथी, आयुर्वेद और नेचुरोपैथी सीख ली । जब भी मौक़ा मिला, बचपन में सीखी हुई संस्कृत के ज्ञान को भी खूब निखारा। गोस्वामी तुलसीदास की अवधी और सूरदास की व्रज भाषा भी सीख ली , हिंदी साहित्य के साथ साथ । कई भाषाओं के ज्ञाता थे कमला के पिता -अंग्रेज़ी , उर्दू, तेलुगू , फ़ारसी , हिंदी , कन्नड़, मराठी और संस्कृत फ़र्राटे से बोलते । 70 साल की आयु में तमिळ साहित्य का गहन अध्ययन किया । क़रीब 9-10 भाषाओं पर पूरा अधिकार था डॉ बी दीक्षाचारी का क्योंकि नई नई बातें सीखने की तीव्र उत्कंठा जो थी ।

इन सबके साथ साथ बहुत बढ़िया आध्यात्मिक रुझान था और पीर , फ़क़ीर , संतों का साथ बहुत ही पसंद था । बहुत आध्यात्मिक बातें होती तो कमला पास बैठ कर सब सुनती थी । हर समय अपने पिता 'अय्या ' के साथ ही लगी रहती । पूछती थी कि अय्या अब मैं बड़ी हो गई हूँ न ? मैं सब कुछ समझने लग गई हूँ न?

देखिये आसमान कितना लाल हो गया है क्योंकि सीता मैय्या ने अपनी साड़ी सुखाई है। यह सब सुनकर अय्या प्यार से गले लगा लेते अपनी समझदार बिटिया को !

बस कमला को उन की सिगरेट पीने की लत बहुत ख़राब लगती थी । हमेशा टोकती थी कि इस धुएँ से साँस लेने में तकलीफ़ होती है । परिवार वाले तो उनकी अलमस्ती और घुमक्कड़पने की वजह से भी दुखी हो जाते थे । घर की ज़िम्मेदारी भी उनसे उठाई नहीं जाती थी तो बच्चों की पढ़ाई और परवरिश पर भी इसका बहुत असर पड़ा।

भाग -5

बड़े सबेरे उठकर अकेली खेतों में जाकर टमाटर , भिंडी , खीरा खाकर भरपेट नाश्ता करती तो ऊसीगारू (गारू: तेलगु में खुद से बड़े व्यक्ति के नाम के साथ आदर के रूप में गारू जोड़ा जाता है) ढूँढ़ता हुआ पहुँचता और कंधे पर बिठा कर घर ले जाता। घर पर माँ ज्वार की रोटी , खूब सारा मख्खन और गाय का गरमा गरम दूध देती खाने में । दूध , मख्खन , शुद्ध घी , दही और मठ्ठा खा खाकर तो इतने हृष्ट पुष्ट बने कमला और बाक़ी भाई बहनें ।

अय्या थान के थान एक ही जैसा कपड़ा ख़रीद कर पटक जाते तो माँ सारे बच्चों को बस एक ही प्रकार के कपड़े सिलवाकर पहना देती । बड़े इतराते थे सातों भाई बहन एक ही डिज़ाइन के कपड़ों में ।

फिर आते थे टीन के टीन बड़े बड़े डब्बों में टाफी और बिस्कुट । बस फिर क्या था जब मन किया तब और ख़ास कर स्कूल जाते समय तो दोनों जेबों में भर कर रास्ते भर लुटाते और ख़ास कर कक्षा में तो बड़ी धाक थी इस की वजह से।

टीचर भी बड़ा लाड़ लड़ाती थी डॉक्टर साहब की बेटी कमला से । एक बार स्कूल में इंस्पेक्शन के दौरान सवाल पूछा गया कि हिंदू लोग गाय की पूजा क्यों करते हैं ? सारी कक्षा को तो जैसे साँप ही सूँघ गया ।तब कमला तपाक से बोली क्योंकि वह लक्ष्मी का रूप है, गोधन है , बछड़ा देती है तो बैल खेती में जोते जाते हैं , खेती से अनाज और दलहन और पशुओं के लिये चारा उगाया जाता है । गाय दूध देती है तो घर भर दूध , दही , मख्खन और घी से महक जाता है, और मेरी अम्मा तो गाय की इतनी सेवा और प्यार करती है क्योंकि वह हमारी माँ है । पोषण करती है ।

हमारे घरों में गाय के गोबर से तो आँगन लेपा जाता है , उपले और खाद बनता है । हमारे किचन गार्डन में पंचगव्य का खाद डलता है तो सारी सब्ज़ियाँ , फल , फूल कितने सारे घर भर के लिये मिल जाते हैं । खर्चा। कम होता है ।

हमारे अय्या का तो जब किसी भी नई जगह तबादला होता है तो पहले खेत के लिये ज़मीन और गायें ख़रीदते हैं । और अम्मा तो गाय के पृष्ट भाग में लक्ष्मी होती है इसलिये रोज़ सबेरे पूजा करती है । इतना सशक्त दलील दिया कि इंस्पेक्टर ने दांतों तले उँगली दबा ली और बहुत तारीफ़ की । कक्षा की टीचर ने आकर कहा कि कमला तुमने मेरी इज़्ज़त बचा दी आज से मैं तुम्हें कमला देवी चट्टोपध्यायगारू कह कर पुकारा करूगीं ।

इसी तरह एक बार तेलुगु शब्द ' मुप्पुरी' का अर्थ लिखना था तो सब ने ग़लत जवाब लिखा था तो कमला का जवाब ठीक था कि जैसे बालों के तीन भाग कर के गूँथ कर चोटी बनाई जाती है ऐसी ही प्रकिया को मुप्पुरी कहते हैं ।

पढ़ाई की शौक़ीन, हाज़िर जवाब, सोच समझ कर बोलने वाली और तेज तर्रार महिला थी मेरी अम्मा - कमलम्म गारू !

भाग-6

स्कूल के बाहर आसिगीडू और ऊसिगाडू इंतज़ार करते तो कंधे की सवारी का आनंद लूटते बड़ा भाई वेणु और नन्ही कमला । बीच में आम और अमरूद के बाग़ान आते तो बस पेड़ पर चढ़ कर फल तोड़ कर खाने का मज़ा ही कुछ और था । डॉक्टर साहब के बच्चों की ठाठ ही निराली थी कोई भी कुछ नहीं

कहता । चाहे जब पास वाले मंदिर में घुस जाओ प्रसाद तो मिलता ही था ।

घर पर ज़िम्मेदारी थी कमला की दादी की देखभाल करने की । दादी लक्ष्मीदेवम्मा ने किसी राह चलते आँखों की रौशनी तेज़ करने की दवाई बेचने वाले से आँखों में किसी पत्तों का रस टपकना लिया था । बस फिर क्या था डॉक्टर साहब की माँ के दोनों आँखों की रौशनी ही छिन गई । दीक्षा बड़ा नाराज़ हुआ और अब अच्छी भली दादी जिन्हें 'अव्वा' कहा जाता था ' 'गुड्डुव्वा ' (अंधी दादी) बन गई । लकड़ी बने वेणू ओर कमला । हल्की फुलका इतनी की गेंद में उठाकर नहलाना , पेशाब , पैखाना करवाना , एक जगह से दूसरे जगह ले जाना आना पड़ता था । पर खूब मन लगा कर कर कसकर सेवा की दीक्षा के बच्चों ने । गुड्व्वा ने शत शत आशीष दिये कमला और वेणू को । वेणू बस दो ही साल बड़ा तो था ! बाक़ी बच्चे छोटे छोटे थे । बड़ी बहन माँ का हाथ बँटाती , भाई बहनों को सम्भालती । फिर सातों बुआएँ भी तो घर में साथ ही रहती थीं ।

बड़े कड़े नियम बनाये थे समाज ने उन जैसों के लिये । सर मुडंवाना , गेरुआ रंग की एकल साड़ी बिना ब्लाउज़. के पहनना , अपशकुनी कह कर सामाजिक बहिष्कार का अपमान सहना , और न जाने क्या क्या होता होगा । कमला सिहर जाती उनकी व्यथा से । श्री वैष्णव संप्रदाय में एक प्रथा है जिसे 'मडुगू - आचारम ' कहते हैं । आज के करोना काल का सबसे उत्तम तरीक़ा है अपने बचाव का !

सही साइंटिफिक आधार से बनायी गई प्रथा है यह । फ़िज़िकल डिसटेंसिग , हाईजीन का पालन यानी हाथ पैर धोकर ही घर में प्रवेश करना, चप्पल अगर पहनी हो तो धोकर दालान के बाहर रखना, बाहर वाले कमरे तक ही प्रवेश , नीचे चटाई पर बैठना , पानी दिया तो लोटा झूठा किए बगैर ऊपर से पानी पीना , नाश्ता भोजन के बाद बाहर नल में बर्तन माँज कर साफ़ करना, या तो पत्तल मवेशियों को खिला देना , खाने की जगह को गोबर से लीप कर फिर पानी से धोना और दूर से ही सारा वार्तालाप करके जल्दी खिसक जाना ।

रसोई में तो प्रवेश वर्जित ही था ।घर की महिलायें आड़ से ही बातें सुन लेतीं । सुबह सबेरे आँगन बिहार कर , गोबर के पानी का प्रेक्षण करके हाथ से यंत्र बना देना तो राज का काम था । शाम सबेरे तुलसी की पूजा कर दिया जला कर हाथ जोड़ती । चक्की में आटा पीसना , धान कूटना , सूप से फटकना, पानी खींचना , ईंधन जुटाना , कुल देवता का पूजन और सबके भोजन की व्यवस्था करना । खाना पंगत में परोसना , खिलाना और बर्तन धोकर चूल्हा लीप पोत कर साफ़ करना । बच्चों का काम था गोबर से झूठन उठाकर , पानी से धोना । फिर घर की महिलायें बैठ कर घड़ी दो घड़ी सुस्ताती , बतियाती और चलता था पान , चूना , सुपारी का पर्व । कैलशियम और आयरन की कमी पूरी हो जाती थी । बुआएँ सब फिज़िकल डिसटेंस बना कर यह सब करती और किसी भी शुभ कार्यों में शामिल नहीं हो सकतीं थीं ।

तो कुछ अच्छे और कुछ बुरे सामाजिक नियमों का कड़ाई से पालन किया जाता था । इसी वजह से कमला जैसी छोटी बच्चियों को रसोई के कामों से बाहर रखा जाता था । तो अम्मा को पाक शास्त्र का काम कम ही मिला था मायके में ।

हाँ , फिर समय ही कहाँ था कमला के पास, सारा समय तो अय्या के साथ बीतता था अस्पताल में । मरीज़ों को देखना, बीमारियों के बारे में जानकारी मिलना , होमियोपैथी की दवाईयां देते अय्या तो कहती आप नाम बताइये तो मैं निकाल कर दूगीं । इस प्रकार होमियोपैथी सीख ली । अय्य अक्सर आयुर्वेदिक लेह्यम् बनाते थे, सारी जड़ी बूटियाँ और औषधीय पत्तों की जानकारी देते थे जो बड़ी सहजता से कमला ने सीख ली । विशेष लकड़ी की आग जलाकर मोती, सोने , चाँदी आदि का का भस्म बनाते, लोगों को

मंत्र और यंत्र बांधते , झाड़ फूँक में विश्वास करने वाले का वैसा ही उपचार कर ठीक करते और ज़मीन में गाड़ कर दवाई बनाते जिसे हमारी तेलुगु भाषा में ' पुटिंग पेट्टेदी ' कहतें हैं और बड़ी पोटेंट दवाई जैसे 'अमृत ... बनाते थे । कमला ने सब सीख लिया अय्या से ।

और तो और गाँव के दूर पेड़ के नीचे पोस्ट मार्टिन करते अय्या तो साथ रहती और सारे अंदरूनी अवयवों के बारे में ढेर सारे सवाल करती ।। एक बार एक मृत देह का पेट इतना फूल गया था कि जैसे ही चीरा लगाया तो उसमें से बिलबिलाते हुए कीड़े बाहर निकल आये । किसी भी प्रकिया से डरती नहीं थी मेरी अम्मा ।

खूब इंट्रेंस्ट से सारी जानकारी लेती थी यह डॉक्टर की बेटी । मन में डॉक्टर बनने का सपना ही देखती थी मेरी अम्मा !

भाग -7

बड़े भाई डॉक्टर बुक्कपट्टणम वेणुगोपाल का जन्म महाराष्ट्र के मंजिलगांव , बीड ज़िले में 24.12.1929 को हुआ था । उनके दो साल पहले बड़ी बहन शकुंतला और दो साल बाद छोटी बहन कमला का जन्म हुआ । पिताजी ने बर्थ सर्टिफ़िकेट आदि तो नहीं रखा पर मौखिक रूप से नक्षत्रव्रत, राशि , मास, दिवस, समय , स्थान सब कम्प्यूटर की तरह याद था उन्हें । बहुत तीक्ष्ण स्मरण शक्ति थी पिताजी की । हालाँकि सारे रेकर्ड्ज़ मुस्लिम कैलंडर हिजरी में निज़ाम स्टेट में उपलब्ध हैं । चूकिं रिकार्ड्स नहीं थे तो सही तारीख़ बताना कठिन काम है । बस अपने आप ही तय कर लिया ।

महाराष्ट्र में रहने की वजह से कमला की अम्मा महाराष्ट्र के व्यंजन बनाना सीख गई थी - बाजरा और ज्वार की भाखरी , चून, वरण , पातळ भाजी । मेरी अम्मम्मा पातळ को पाताळ कहती तो कमला ने सोचती कि यह पाताल लोक की भाजी है ।

वेणुगोपाल बहुत साहसी , क्यूरियस, खोजी और चतुर प्रकृति के थे । जब पिताजी का तेलंगाना के निर्मल शहर और फिर बोथ शहर , आदिलाबाद में तबादला हुआ और दोनों का यानि वेणु और कमला का स्कूल में दाख़िला हुआ । छोटे भाई श्रीनिवास का जन्म हुआ यहाँ । हमेशा से शांत और चुपचाप रहने वाला कमला का सबसे प्यारा भाई भूख लगने पर भी खाना नहीं माँगता था । कोई दे दें तो ही खाता , नहीं तो गंभीर चिंतन में रहता ।

यहाँ स्कूल मास्टर लड़कों को मारते जो वेणू को बिल्कुल असहनीय था । स्कूल जाने से कमला का बड़ा भाई कतराने लगा ।फिर जब पिताजी का तबादला शाहपुर शहर , गुलबर्गा ज़िले में में हुआ तो दोनों को सरकारी मदरसे में दाखिल किया । कमला भी अलीफ , बे, ते , टे, पे सीख गई । इधर छोटे भाई रामानुज और सुलोचना का जन्म हुआ ।

रामानुज का राहट के पास ही खेलता और पानी से खूब नहाता । पूछने पर कहता 'ताय कूम् बुय्य कूम् ' यानी बूं बूं हूँ गिरते पानी में खूब नहाता हूँ ।

सुलोचना छोटी बच्ची थी तो सुभद्रा अत्ता (बुआ) को भी बेटा हुआ। उसको माँ का दूध कम पड़ता तो बाक़ी अत्ता (बुआ) भाभी यानि मेरी अम्मम्मा को कहती कि सुलोचना को गाय का दूध दे दो और अपना दूध लड़के को पिला दो । इस प्रकार सुलोचना के लिवर पर बुरा असर पड़ा और कई वर्षों तक खाने का परहेज़ रखना पड़ा । कई दफ़ा तो भूख के मारे झूठे पत्तल ही से खाना उठा लेती मेरी सबसे प्यारी मौसी ।

और उसके दो साल बाद सबसे छोटी बेटी वसुंधरा का जन्म हुआ था । हर घर बड़े बड़े होते थे । खूब खुले खुले। ऐसे ही एक घर में 2 साल की छोटी बहन वसुंधरा का चूल्हे की आँच से फ़्रॉक जल कर शरीर से चिपक गया और कमर और हिप की चमड़ी आपस में चिपक गई । बहुत तकलीफ़ सहने के बाद एक दिन घी के बर्तन को लेने की कोशिश में थी तो अय्या ने जल्दी से जाकर कसकर अलग किया । दर्द से चीख पड़ी नन्ही सी जान पर धीरे धीरे इलाज से थोड़ी बहुत ठीक रही पर दाग हमेशा के लिये रह गये मेरी अति सुंदर और प्यारी छोटी मौसी के कमर पर ।

जब डॉक्टर दीक्षाचारी का नलगोंडा शहर , तेलंगाना में ताबदला हुआ तो 7 साल के वेणुगोपाल और 5 साल की कमला को सीतम्मत्ता और गुड्वअव्वा के साथ हैदराबाद भेज दिया गया । यहाँ गृहस्थी जमाई ।
सबसे छोटे चाचा बुक्कपट्टनम सीतारामाचारलु जो निज़ाम स्टेट रेलवे रोड ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट में नौकरी कर रहे थे वेनभी यहीं आ गये सपरिवार एक और बुआ और उनके परिवार के साथ तो कुल मिला कर 18 लोगों का संयुक्त परिवार साथ रहने लगा । गुड्डुअव्वा का ही राज चलता था । कमला और वेणु का नारायण गुडा स्कूल में दाख़िला हुआ ।

भाग -8

यह संयुक्त परिवार 18 जनों का ज़्यादा दिन नहीं टिका । गुड्डुअव्वा के चार बच्चों का परिवार - दो बेटों और दो बेटियाँ , सबकी अपनी अपनी आय और रुतबा था । गुड्डुअव्वा ने अपने दो लड़कों के ही साथ रहने का विचार बनाया । दीक्षा और सीताराम ! लेकिन राज तो गुड्डुअव्वा का ही चलता था । कोई भी उनकी बात को काट नहीं सकता था । उनका अंधापन बिल्कुल आड़े नहीं आया । बच्चों की सारी ज़रूरतें और फ़रमाइशें उन्हीके द्वारा पूरी होती थी । उनके देवर थे असल में परिवार के मुखिया और सारे ख़र्चों को सँभालने की ज़िम्मेदारी उनकी थी । गुड्डुअव्वा के पति यानि हमारे परनाना ज़िम्मेदारियों से मुक्त पर बहुत ही विद्वान थे । पर 20 बच्चे पैदा करने में उनका पूरा योगदान था , 30 सालों में ।

सबसे बड़े बच्चे और सबसे छोटे बच्चे में तीस साल का अंतर था । इसलिए परदादी बस बच्चे पैदा कर पोषण करने के लिये अपने सबसे बड़ी बेटी को नवजात शिशु दे देती थी और खुद तो परिवार में हुकूमत करने में लग जाती । बच्चों की पढ़ाई का उनका जिम्मा था। इस प्रकार कमला के परदादा अन्नय्याचारलू और बेटे दीक्षाचारलू दोनों का स्वभाव समान था । कोई भी ज़िम्मेदारी न नहीं लेने का समान स्वभाव दोनों में था ।! इस कारण से दीक्षाचार्लू के बच्चों की पढ़ाई बहुत ही उपेक्षित हुई । इसी वजह से भी गुड्डुअव्वा ने दीक्षा के बच्चों की भी ज़िम्मेदारी अपने सर पर पर ले ली थी

हैदराबाद में वेणु गोपाल और कमला की आगे की पढ़ाई की ज़िम्मेवारी चाचा (तेलुगु में पिन्नय्या) सीतारामाचारलू पिन्नय्या ने उठाई ।

इधर डॉक्टर दीक्षाचारी के बड़े भाई वकील श्रीनिवासाचारलू पहले से ही दीक्षा के विलक्षण प्रतिभा के कारण उनसे बहुत जलते थे । सोचते इस के हाथ कोई भी जायदाद नहीं जानी चाहिये । यह बड़ा 'फटिंगडू ' (हरफ़नमौला) है । इसको किसी भी तरह बुड़बक ही रखना चाहिये और पढ़ने नहीं देना चाहिये । तो अपने जासूस लगा रखे थे कि दीक्षा जब भी पढ़ने बैठे तो कोई और काम बता कर उसे बाहर भेजो । इसीलिये दीक्षा इधर उधर घूमते घूमते घुमक्कड़ ही बना रहा ।

भाग -9

बस जब योजना समझ में आई तो माँ से पैसे माँगे । माँ ने गहनों की पोटली थमा दी थी अपने बेटे दीक्षा को और वह घर छोड़ कर कुछ बनने निकल पड़ा था कि जब कुछ बनकर आऊँगा तभी मुँह दिखाऊँगा माँ को ।

अब वकील भाईं श्रीनिवासाचार्लु का रास्ता साफ़ होते ही सारी ज़मीन जायदाद हड़प ली और सरकार के पास गिरवी रख दी । दीक्षा का परिवार , गुड्डुअव्वा सब ग़रीब हो गये थे और वकील भाई का ऐशों आराम, रूतबा और अमीरी का जीवन था । हज़ारों के गहनों से लकदक रहती उनकी पत्नी , ननदों की ते परवाह ही नहीं थी। जब देखो तब नीचा दिखाती थी वह !

बहुत सालों के बाद जब डॉक्टर दीक्षाचारी को समझ आया तो 1952 हो चुका था । गांधी जी की हत्या 4 वर्ष पूर्व हो गयी थी । भारत आज़ाद था पर निज़ाम का शासन चलता हैदराबाद में।

वैसे भी पहले से ही अंग्रेज ऑफ़िसर इन्स्पेक्शन के लिए आते तो हैट उतारकर कर सलाम करना उनके स्वाभिमान को बहुत अखरता था । पर इतने बड़े परिवार की देखरेख भी तो करनी थी तो बस निभाना पड़ रहा था ।

दोनों बड़ी लड़कियाँ भी शादी के लायक़ हो गईं थीं । उसकी भी चिंता थी । बुआ अलमेलम्मत्ता के दो बेटे और दो बेटियां थी , राघवा, श्रीनिवास , रागम्मा और वेंकटलक्षी ।

दोनों बेटों को बड़ी बुआ जानकीअम्मा अत्ता जिनकी कोई संतान नहीं थी गोद ले लिया था । घर में सब साथ ही रहते थे । एक दिन आयुर्वेद की दवाई बनाने वाली विशेष लकड़ी कुल्हाड़ी से काट कर जब राघवा ला रहा था तो चिंतित अय्या को देख बड़ी बेटी शकुंतला ने कहा कि अय्या आप इधर उधर मत ढूढिये , यह राघवा तो है न इसी से मेरा विवाह करा दीजिये । खर्चा भी नहीं और घर का ही बंदा है !

हांलाकि शकुंतला को थोड़ा मलाल था कि पाँचवीं कक्षा तक ही वे पढ़ सकी थी लेकिन राघवा उन्हें सोना जैसा आदमी प्रतीत होता था। शकुंतला को बनने सँवरने , ठाठ से रहने का शौक़ था । फ़िल्मों की तो दीवानी थी मेरी पेदम्मा (बड़ी माँ) शकुंतला । मज़े से सास और बहू फ़िल्में देखती थीं । कमला की बड़ी बहन शकुंतला में पढ़ने का शौक़ था तो खूब पढ़ती था ।

अब कमला की भी चिंता पालकों पर आ पड़ी तो फटाफट सगे मामा सीतारामाचारलू से बात पक्की हो गई । कमला को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आई । वह आगे पढ़ना चाह रही थी । बात आई गई हो गई ।

इस बीच अपने दादाजी के साथ किसी रिश्तेदार की शादी में गई थी । उन दिनों मैच मेकिग का यहीं मौक़ा होता था । घर के बड़े कुंडलियाँ ले कर लड़का या लड़की की तलाश में रहते थे । सारी शादियाँ अपने अपने रिश्तेदारों के परिवारों में ही होती थी ।

वर्णसंकर न होने देने की अचूक रामबाण थी यह प्रथा । कोई उपयुक्त पात्र मिले जो सगोत्र न हो तो बस कर दो रिश्ता , फिर चाहे वह मामा हो या बुआ का बेटा हो ! बड़े फ़ायदे नज़र आते होगें ज़मीन जायदाद और सम्प्रदाय को सुरक्षित रखने के तभी तो हमारे पूर्वजों ने इतनी समझदारी दिखाई । फिर घर की बात घर में भी तो रहती थी न!

भाग -10

तो चलें, हम पता करते हैं कमला और वेणुगोपाल की हैदराबाद में पढ़ाई के बारे। कमला नारायणगुडा में लड़कियों के स्कूल में पढ़ रही थी और वेणुगोपाल थोड़ी दूर लड़कों के स्कूल में !

दोनों को सीताफलमंडी जहां रहते थे वहाँ से बहुत दूर जाना पड़ता पैदल, फिर ट्रेन से , फिर पैदल ! काचीगुडा स्टेशन पैदल जाते , फिर ट्रेन का सफ़र था , फिर आगे । वापसी भी ऐसी ही । पर वेणू तो बहुत एडवेंचरस था । वह कमला का बस्ता फेंक देता और चलती ट्रेन से कूदने को कहता था। बस, कमला कूद जाती थी क्योंकि बड़े भाई का आदेश जो था और डरना तो कमला का स्वभाव ही नहीं था । दोनों भाई बहन बड़े अच्छे दोस्त भी थे । वेणू के कान में से मवाद बहता रहता था तो उपचार के अभाव में धीरे धीरे 24 साल की उम्र में कानों से सुनना कम होते होते बंद ही हो गया । कमला को बहुत चिंता रहती थी और अपने बड़े भाई के साथ साथ लगी रहती थी । ENT ने बताया कि कुछ जन्मजात कमी, ग़लत उपचार और लापरवाही के कारण कान में इतना ज्यादा ख़राब हो गया है । नमज़हुई हड्डी (Mastoid bone) ही सड़ कर गल गई थी ।

स्कूल में भी कम सुनाई देने की वजह से नर्सरी में भेज दिया । बाद में डबल प्रमोशन योग्यता की वजह से मिला । पर पीछे बिठा दिया जाता जिसके कारण और भी सुनाई नहीं देता था । तो बैठे बैठे निज़ाम उस्मान अली खान बहादुर का कार्टून बनाने में मशगूल था तो मुदारी (टीचर) ने पकड़ लिया । फिर तो कस कर मार पड़ी । सदरमुदारी (हेडमास्टर) के सामने पेशी हुई तो राजद्रोह और गैर वफादार होने के संगीन अपराध के तहत स्कूल से निकाल (रस्टिकेट) दिया गया । मार अलग से खूब पड़ी फिर से । गार्डियन को बुलाया जिन्होंने माफ़ी माँगी और गिड़गिड़ाने पर कहा कि यह लड़का आगे ऐसा राजद्रोह जैसे अपराधी हरकतों से बाज़ आये । चाचा जी के कहने पर वेणु ने यह सब बोल दिया पर वह यह समझ नहीं पाया कि उसका क्या अपराध था ।

कितनी विडंबना है कि किस प्रकार हमलोग गुलाम, मूक और मूर्ख बन जाते हैं । निजाम का शासन क्रूरता, घमंड तथा क्रूर व्यवहार की सारी हदें पार कर चुका था । Absolute power corrupts absolutely. सारी ऊँची नौकरियाँ मुस्लिमों के लिये थीं । हिंदुओं को निम्न पोस्ट ही मिलते थे । चाहे कितना भी पढे लिखे हों । दीक्षाचारी के समक्ष बच्चों की पढ़ाई के प्रति उदासीनता का यह भी कारण रहा होगा ।

मदरसों में उर्दू ही पढ़ाई जाती और पिन्नम्मा (चाची) जो पढी लिखीं थीं घर पर तेलुगू पढ़ाती । काफ़ी कड़क महिला थी तो बच्चे उनसे डरते थे । कमला को खूब प्यार करती और कमला भी घर का सारा काम करती थी । पानी भरना , गर्म पानी के लिए हंडा (बायलर) जलाना, छोटे छोटे बच्चों को खिलाना और देखभाल करना । फिर गुड्डुअव्वा की भी पूरी सेवा करती । मदरसे से आते ही हाथ पैर धोकर काम में लग जाती थी । हर शनिवार भगवान राम की पूजा करती और पिन्नम्मा तो गुलपापडी का प्रसाद बनाती।
एक गाना गाती थी पूजा करते करते कन्नड़ भाषा में - 'वंदू सेरु हिट्टू हाकी, वंदू सेरू तुप्पा हाकी , बेसी , इरूडू सेरू बेल्ला हाकी , ऊँचे माडी प्रसादा माडी...' एक सेर आटा , एक सेर घी डाल कर भून कर दो सेर गूड डाल कर लड्डू का प्रसाद बनाओ ! कहानी सुनते सुनते ही मुँह से लार टपकने लग जाए ! शनिवार को घर पहुँच कर हाथ पैर धो कर बस खड़े हो जाओ तो दो गरमा गरम गुलपापडी का प्रसाद मिल जाता । कितना आनंद आता था कमला को । आख़िर तक भी बताती थी और बचपन के गुलपापडी का मानसिक आनंद उठाती थी मेरी अम्मा - कमला !

भाग -11

इस बार जब एक शादी में गयी थी कमला। सात -आठ साल की होगी । तो कर्णमडकल गोपालकृष्णमाचारलू भी आये थे उसी शादी में । वे काफ़ी नामी मेजिस्ट्रेट, विद्वान , और बहु चर्चित असट्रोलोजिस्ट और मैच मेकर के रूप में विख्यात थे । वे के एस श्रीनिवासाचारलु के बड़े भाई, जयलक्षीमम्मा के जेठ तथा राधाकृष्ण के ताऊ । गंभीर सी कमला को झट से पसंद कर लिया अपने बड़े भतीजे राधी के लिये । कुंडली भी नहीं देखने की ज़रूरत समझी । बस नक्षत्र जानते ही समझ गये कि यह लड़की अनुराधा नक्षत्र में जन्मी है तो राधाकृष्ण की अनुगामिनी रहेगी । परफ़ेक्ट मैच ! बस घोषित कर दिया की यह लड़की आज से हमारी है ।

ख़ैर कमला को तो पढ़ना था और परिवार के वरिष्ठों में इसकी शादी के बारे कोई जल्दी नहीं थी । न जान न पहचान । कहाँ हम सुरपुरम वाले और यह लोग तो मैसूर के परकाल मठं वाले हैं । सुना है कि जयलक्षीअम्मा बड़ी मडुगू - आचारम् वाली हैं। तो हम भी किया कम हैं , आदि आदि ।
वापस आई तो हनुमान व्यायाम शाला जाने का मज़ा था । बढ़िया योगासन, कुश्ती , गुलाटी, छलांग लगाने में कितना मज़ा था । शरीर भी कसरत से गठीला बन गया था । फिर तैराकी कितनी अच्छी लगती है । मदरसे में भी पढ़ाई अच्छी तरह से हो रही थी । घर पर तेलुगु में 'पेद्द बालशिक्षा ' (बड़ी बाल शिक्षा) में 10 वीं तक की पूरी पढ़ाई थी । बहुत मज़ा आता था ।

पिन्नम्मा भी इन दिनों कुछ ज़्यादा ही व्यस्त हो गईं थीं । बच्चों पर उनकी निगरानी कम होने लगी । शायद बड़ी बहन शकुंतला की शादी की तैय्यारियों में व्यस्त हो गईं थीं या फिर दूसरा विश्व युद्ध तेज़ हो गया था और नेताजी सुभाष चंद्र बोस बर्मा और आसान में लड़ रहे थे । ऐसी स्थिति में डॉ दीक्षाचारी ने परिवार को कोटगिरी ग्राम , निज़ामाबाद ज़िले में बुलाने का निर्णय ले लिया। सब कुछ उल्टा पुल्टा हो गया । पढ़ाई छूट गई । 10 बच्चों की टोली थी । दिन भर खेलते , समय बर्बाद करते और मस्ती करते थे । बच्चे तो खूब खुश थे इस माहौल में ।

जगन्माता अनुराधा

(1940-1948)

भाग 12

स्कूल के दिनों में कमला और वेणु बाक़ी सहपाठियों के साथ खाने की छुट्टी मिलती तो एक ज्ञानी व्यक्ति के पास नीति और सामाजिक विषयों के ज्ञान के लिए जाते थे। कमला की कई लड़कियों से अच्छी दोस्ती थी जो आख़िरी तक बनी रही ।

पढ़ाई अच्छी चल रही थी क्योंकि खूब मेहनती भी थी और पढ़ाई में रूचि भी थी । तेलुगु भाषा की अच्छी पकड़ हुई । वेमन पदालु, नीतिशतकमु , श्लोक आदि कंठस्थ हुए । आदिलाबाद में घर पर संस्कृत के शिक्षक आते थे । अय्या भी खूब पढ़ते व शास्त्रार्थ करते थे । तो कमला भी भाग लेती । अय्या खूब खुश होते कमला को बढ़ता हुआ देख कर । उनकी यह बिटिया बाक़ी बच्चों से काफ़ी अलग थी । बहुत सोच कर समझदारी से बातें करती । कम बोलती पर जब बोलती तो सामने वाला उसके तर्क के सामने कुछ नहीं बोल पाता था । और अगर चिठ्ठी लिखती तो भाषा पर इतना अधिकार कि अगला पढ़कर आश्चर्यचकित हो जाता। साफ़ लिखाई, शुद्ध उच्चारण और बहुत जानने की उत्कंठा थी उसकी । अय्या को संस्कृत और वैदिक शास्त्र पढ़ते देखती तो ख़ुद भी पढ़ने के लिये बैठ जाती और घंटों पढ़ती रहती । इससे दोहरा फ़ायदा हुआ । ज्ञानवर्धन हुआ और अय्या का सानिध्य मिला ।

अय्या एक संस्कृत सुभाषितानी बोलते थे :
वेद शास्त्र विनोदेन,
कालो गच्छति धीमताम् ।
व्यसनेन च मूर्खाणाम् ,
निद्रया कलहेन वा ।।

अर्थात् बुद्धिमान जन वेद शास्त्र पढ़कर ज्ञान वर्धन करते हैं , मूर्ख जन व्यसन, निद्रा और कलह करते रहते हैं ।

कमला देखती की जब भी समय मिलता तो अय्या धर्मशास्त्रों का अध्ययन करते और अपना ज्ञानवर्द्धन करते तो कमला भी वैसा ही करती । तभी तो उनके बड़े भाई श्रीनिवासाचारलु कहते कि दीक्षा को पढ़ने लिखने नहीं देना चाहिये ना तो कोई ज़मीन जायदाद मिलनी चाहिये । ये हम सबसे ज़्यादा होशियार और विद्वान है । और कमला बिल्कुल अपने पिताजी जैसी ।

दूसरे विश्व युद्ध के समय चावल इतना सड़ा गला आता था कि घर भर बदबू से भर जाता था। मेरी अम्मा कमला बताती थी बर्मा से आये हुए चावलों को देखकर उबकाई आती थी । एक आदमी रोज़ दोपहर को चाय की केतली लेकर चाय पिलाने आ जाता था जिसके कारण हर घर को चाय की लत लग गई थी । अंग्रेजों ने इस प्रकार भी लोगों को अपने चंगुल में फँसाये रखा ।

1946-47 में भारत में सत्ता परिवर्तन की प्रक्रिया ज़ोर शोर से चल रही थी । जैसे ही आज़ादी मिली तभी देशवासियों को विभाजन की त्रासदी झेलनी पड़ गई ।

भाग- 12

इसका असर निज़ाम के स्टेट पर भी पड़ा । कई स्वतंत्रता सेनानी उठ खड़े हुए । क़ासिम रिज़वी की अगुवाई में मजलिसे इत्तेहादुल मुसलमीन (MIM) बनी । उन्होंने रज़ाकारों की पॉरामिलिटरी फ़ोर्स खड़ी कर दी । हिंदुओं के बीच आर्य समाज जैसी कई संस्थाओं ने काम करना शुरू कर दिया और बहुत सारे छात्र गुप्त रूप से काम में लग गये । हैदराबाद का रेड्डी अस्पताल इसका केंद्र बना । कांग्रेस और आर्य समाज के कॉमन लीडर थे । तो बहुत ज़ोर शोर से वेणु और कमला एक्टिव हुए । हड़ताल , गुप्त मीटिंग , घेराव बढ़ गये । जब शासन को पता चला तो डॉ दीक्षाचारी को आदिलाबाद ट्रांसफ़र कर दिया । उन दिनों वह काला पानी कहलाता था ।

आदिलाबाद में तो लड़कियों का घर से बाहर निकलना ही मुश्किल था । लंबे चौड़े अरब, रोहिल्ला और रज़ाकारों ने जीना हराम कर दिया था । उन दाढीज़ारों के लिए घर लूटना , जला देना , धमकी देना, डराना आसान बात थी । पगड़ी और दाढ़ी में विकराल लगते और लोग डर से थर-थर काँपते थे । डॉ साहब का रुतबा तो था पर कोई सुरक्षित नहीं था । लड़के तो बिल्कुल ही नहीं । लोगों को पकड़ पकड़ कर डॉ साहब के पास 'सुंती' कराने को ले आते । मुसलमान बनाना चाहते थे लोगों को । अब डॉक्टर साहब को बच्चों और परिवार की सुरक्षा की चिंता सताने लग गई थी। क्या करें कुछ समझ में ही नहीं आता था । पैतृक संपत्ति और जायदाद भी बड़े भाई ने हड़प ली थी ।

जब कमला ऋतुमती हुई थी तो वही मडुगू आचारम का पर्व शुरू हुआ पाँच दिनों के लिये । फिर उत्सव मनाया गया कि अब बिटिया सयानी हो गई है इसलिए इसका स्कूल करने का ख्याल आया । अब

जल्दी थी वराण्वेशन की । इधर कमला जवान हो चली थी ।शादी की बातें आगे बढ़ रहीं थीं । अय्या ने कमला के लिये घर पर ही ट्यूटर की व्यवस्था की थी ताकि वह आंध्रा मेट्रिक की परीक्षा दे सके ।अब तो वह भी शिक्षा रूक गई ।

अचानक एक रिश्ता आया । गुड्डुअव्वा का भांजा । दीक्षा ने आव देखा न ताव फ़टाक से मान लिया । बड़ी बटलर वाली अंग्रेज़ी झाड़ता था वह लड़का । बस लग गया दहेज माँगने । इसी दौरान एक और रिश्ता आया तो अय्या ने कहा कि कमला की सगाई हो चुकी है । पर कमला के दादाजी ने दीक्षा से कहा कि दूसरा रिश्ता ही ठीक है । लड़के के माँ बाप से मिल कर बातें कर लो । सारा मुख्य काम तो दूसरे ही तय करते थे और ऐसी ही आदत डॉ दीक्षाचारलू को पड़ गई थी । इधर दूसरे रिश्ते के लड़के के पिता क़े. यस . श्रीनिवासाचारलू चिठ्ठी पर चिठ्ठयां लिखते जा रहे थे । एक बड़ा पुलिंदा ही बन गया था । फिर से चाचाजी सीतारामाचारलू ने अपने कंधों पर ज़िम्मेदारी उठाई । वर वधू एक बार मिल लें ऐसा विचार कर कर्नूल शहर में मीटिंग रखी गई ।

बड़ी बहन शकुन्तला की शादी (1940-41) तो घर पे ही निपट गई थी । बराती भी वहीं , घराती भी वहीं । खुद पकाओ , खुद खाओ । पुरोहित भी घर का ही बंदा था । घर के सोने से ही काम चल गया । घर की सजावट भी सबने मिल कर की । दुकान से कर्जा लेकर रूपए का इंतज़ाम किया गया । कम खर्चे में शादी हो गई । हांलाकि पूरे सप्ताह रस्में चलतीं रहीं । गुड्डुअव्वा ने बहुत कंट्रोल से सब कुछ अच्छा निभाया था और अपने मर्ज़ी के मुताबिक़ सबसे काम भी करवाया था । घर में ही डॉ साहब की बड़ी बेटी की शादी निपट गई ।

1948 आते आते समाज में काफ़ी परिवर्तन आ गया था । बहुत सारी पुरानी मान्यतायें ख़त्म हो गईं थीं । कमला 16/17 साल की हुई थी । पहले तो जो शादियाँ मुहल्ले में ही हो जाती थी क्योंकि परिवार में ही शादी निपट जाती थी वह अब दूर के शहरों में भी होने लग गई थीं । तो खर्चे भी दुगुने होने लगे थे । फिर सोना , ज़ेवर , वरकटणम (दहेज) की भी बातें बढ़ गईं थी । बात पक्की करने में ही 70 ग्राम सोना देना पड़ता था !

अब कमला के समय अय्या के लिये बड़ी समस्या खड़ी हो गई । रूपयों का कैसे इंतज़ाम होगा? बचत या पूर्व प्लानिंग की आदत तो डॉक्टर साहब को नहीं थी । अब जब छ: महिने में कर्नूल में वर वधू की मीटिंग थी तो घर वालों के दबाव में थोड़े बहुत रूपये जोड़े गये ।

भाग 14

डॉ दीक्षाचारी 16-17 वर्ष की कमला को लेकर निश्चितार्थम् (टीका) के लिये कर्नूल पहुँचे । कमला की अम्मा के चचेरे भाई अन्तशयनम अयंगार के घर पर सब जमा होने लगे । वे बैंक के मैनेजर थे , बड़ा घर और बड़ा लंबा चौड़ा हाल था । बैंक से लगा ही घर था । वर की तरफ़ से तो 70 लोग और वधू की तरफ़ से दो जने ! बड़ा विचित्र मिलन था । वे लोग आश्चर्य चकित रह गये । तो एक बड़े से हॉल में क़े. यस. श्रीनिवासाचारलु रिश्तेदारों को महात्मा गांधी जी के सेवाग्राम आश्रम की कहानी सुना रहे थे । वे सीधे वहीं से अपने बड़े बेटे राधाकृष्ण को साथ लेकर आये थे । पहले वे बेंगलूर से वर्धा गये थे तो वर्धा यात्रा का वृतांत सुना रहे थे । किस्सागोई के लिये काफ़ी मशहूर थे कमला के भावी ससुर ।

बड़ा लंबा सफ़र था । मद्रास सेंट्रल जंक्शन से ट्रेन बदलनी पड़ती थी । तीन रातों का सफ़र था । कर्नाटक , आंध्र प्रदेश, विदर्भ , मध्यप्रदेश और फिर महाराष्ट्र । वर्धा जंक्शन स्टेशन , मामूली सा, न हरियाली , न हलचल । बाहर निकल कर ताँगे की सवारी मिली । 5 मील जाने के बाद पहले आया रेलवे

क्रासिंग , टेकरी , तालीमी संघ , कस्तूरबा अस्पताल , गोशाला , मक्के की खेती , आनंद निकेतन, उत्तर बुनियादी छात्रावास , नई तालिमी संघ , फिर चार झोपड़ियाँ और छोटा सा कुआँ और 7-8 एकर खेती । झोपड़ियों के सामने बिल्कुल साफ़ सुथरी ख़ाली जगह । घास इधर उधर उग आई थी छितरी हुई सी । कोने में गायों के चारे का ढेर और बापू कुटी ! गांधी जी का वाइसरीगल लॉज !!

सेवाग्राम आश्रम की भारत की राजनीतिक राजधानी जैसी होने के बापू कुटी तो महल जैसा ही था। दिमाग़ की छवि में अगर हैदराबाद जैसी खुली जगह की हो , मैसूर जैसी साफ़ सुथरी सड़कों की हो , गार्डन सिटी बेंगलूरू जैसी हरियाली और ठंडक की कल्पना हो तो यह जगह यानि सेवाग्राम अत्यंत गर्म और शुष्क जगह थी ।

क्या यह हिंदुस्तान का महल है ? गांधी जी को तो लोग राजा ही मानते थे । उनसे मिलने के लिए चारों दिशाओं से लोगों का आगमन होता है । किसान आता है, तो ज़मींदार भी आता है । कत्तन आती है तो बुनकर भी आता है । बरामदे में आगंतुकों को बैठाने के लिये ताड़ के पत्तों की चटाई बिछी थी। वहां कडप्पा में प्प्प्प्प के स्लेब्स की फ़र्श नहीं पर गोबर से पुती ज़मीन थी । वहां शर्शी्ि मेहमान बंगले झांकने लगते शर्ट पैंट में तो एक टिन का डिब्बा था ठाठ से बैठने के लिये । आराम फ़रमाइये हुज़ूर , बड़ी दूर से आयें हैं आप ! मुस्कुराहट ऐसी बापू की थकान एकदम मिट जाये ।

भाग - 15

कस्तूरबा कुटी भी बस वहीं हैं । और आदि निवास मेहमानों के लिये । चौथी झोपड़ी कभी दवाखाना बनती तो कभी मीटिंग की जगह । जगह कम पड़े तो मेहमान बा कुटी में भी रह सकते थे । आश्रम के सामने गोशाला थी । पाश्च्यात्य ढंग से मख्खन निकाला जाता था । भई , विदेशी मेहमानों की ब्रेड मख्खन से ख़ातिर जो करनी होती है । दूध गरम कर के, जमा कर , मथ कर मख्खन बिलोया जाता है । उसकी मशीन बग़ल में ही रखी जाती है । गांधी जी तो गाय का दूध पीते नहीं हैं तो गोशाला में कोने में बकरी शाला भी है । भैंस की कोई जगह नहीं है गांधियन इकोनॉमिक्स में । लेकिन मनुष्य ने लालच में पड़कर गोमाता की उपेक्षा है । गो सेवा संघ की ज़िम्मेदारी जमनालाल बजाज ने ले ली है । वैसे सेवाग्राम की सारी ज़मीन और संतरों का बाग़ीचा भी उन्हींका है ।

पहले पहले दिनों में 1936 में तो एक ही झोपड़ी थी । चार कोनों में चार जन रहते थे । गांधी जी , कस्तूरबा गांधी, मीरा बहन और प्यारेलाल जी । पाँचवाँ बादशाह खान , 7 फ़ीट लंबे पठान को तो अपने आप को किसी तरह समेटना पड़ता था । अब तो चार झोपड़ियाँ हैं , जी । एक कलेजा और एक गुसलखाना । अपनी अपनी बारी का इंतज़ार करो । पर कस्तूरबा का हुकुम चलता है क्लोज़्ड में । 70 साल की महिला हैं और सारा मैनेजमेंट उनके हाथ में है । कितनी चुस्त और सावधान , एक चीज़ से भी ध्यान नहीं हटता है उनका । ग़ज़ब का कंट्रोल है भाई !

हाँ गांधी जी के लिये अलग गुसलखाना है । घंटा भर जो नहातें हैं । रसोडे में सब मिलकर काम करतें हैं बा के आदेशानुसार । पीने का पानी कुएँ से खींचना होता है पर उसके लिये लकड़ी का सी -सॉ बना हुआ है । जब मैं पहली बार गया था तो खेत में गन्ने लगे थे । कुएँ के पानी से ही छोटा सा खेत सींचा जाता था । कई तरह के फल जैसे अमरूद, आम, पपीता , संतरा, आँवला , निंबू आदि भी हैं ।

ऐसी बातें सुनते सुनते घंटो कैसे बातें किसी को पता ही नहीं लगा । मानो किसी और दुनिया का बातें कर रहें हैं श्री निवासाचारलू । पर पेट में चूहे भी तो दौड़ रहें हैं । सब भोजन के लिये उठे और आश्चर्य से राधी को देखने लगे । वहीं तो रहता है यह 24 साल का लड़का । बनारस हिंदु विश्वविद्यालय से

इंडस्ट्रियल केमिस्ट्री में स्नातकोत्तर डिग्री हासिल कर सीधे सेवाग्राम आश्रम चला गया । घर आया ही नहीं ।बड़ी बड़ी नेत्रियों के प्रस्ताव ठुकरा दिया । हाँ , खाने के बाद और क़िस्से सुनेंगें हम सब , यह वादा ले कर शादी के सभा ने विराम लिया ।

इधर गुड्डुअव्वा 1942 में स्वर्गवासी हो चुकीं थीं । जीवित होतीं तो कमला की शादी की सारी ज़िम्मेदारी हक़ से सहर्ष लेतीं । शादी तो तिरूपती में होने की बात पक्की हो गई थी । डॉ दीक्षाचारी के परिवार के लिये जो निज़ाम के स्टेट में रहने वाले थें , उनके लिये तो वह विदेश ही था । शादी के तीन महिने पहले ही सारा परिवार कमला के अम्मा , पद्मावतीअम्मा के बहन के घर , रायदुर्ग शहर में रहने पहुँच गया । दादाजी तो जो भी ज़िम्मेदारी ले सकने की स्थिति में था उसको वह काम दे देते । अय्या छ: महिनों की सैलेरी लेकर आये । पर इस बीच दादाजी का दिल के दौरे से देहांत हो गया । कमला के अम्मा का कज़िन भाई अनंतशयनम अयंगार शादियाँ करवाने में एक्सपर्ट था । अब ज़िम्मेदार उन्हीको दी गई । बड़े बेटों वेणू को अय्या ने सारे रूपये सुपुर्द किये । पर अनंतशयनम अयंगार का वर पक्ष के परिवार से भी रिश्ता था तो थोड़ी बहुत ग़लतफ़हमियाँ और मिसअंडरस्टैड़िग भी हुई ।

भाग -16

शाम के भोजन और पान सुपारी के दौर के बाद फिर सब रिश्तेदारों ने अपना अपना स्थान ग्रहण किया । श्रीनिवासाचारलू ने फिर मंचासीन होकर सेवाग्राम आश्रम की कथा आगे बढ़ाई । उन दिनों में रिवाज़ था , तेलुगू में कहावत है कि ' गुड़ि लो दीपम् नोटिलो कबळम '! जैसे ही गृहिणी द्वारा शाम का दीपक चौखट में जलाया जाता है तो चटपट सब मुँह में कौर धर लेते थे । फिर 'वीदि' याने चौरस्ते पर भागवत कथा आरंभ हो जाती और सारा गाँव वहीं आकर बैठ जाता । भागवतुलु व्यास पीठ पर आसन जमाये हरिकथा सुनाते तो लोग मंत्र मुग्ध होकर देर रात तक सुनते रहते ।

यहाँ तो सत्य के पुजारी की सत्य कथा चल रही थी । गांधी जी के सेवाग्राम आश्रम का आँखों देखा वर्णन हो रहा था । आश्रम के कुछ ही दूर था सरंजाम , जहां लोग कताई , बुनाई से थोड़ा बहुत रूपये कमा लेते थे । पास के सेगांव गाँव वालों ने तो पहले पहल थोड़ी दूरी रखी थी क्योंकि गांधी जी हरिजनों के लिये अस्पृश्यता निवारण का काम करते थे पर सही बात समझने के बाद पूरा सहयोग करने लगे और कामों में हाथ बँटाने लगे । बच्चे खेलने पहुँच थे , बीमारी में इलाज कराने आते । फिर हिंदूस्तानी तालीमी संघ 'नई तालीम' का स्कूल भी चलाता था तो वहाँ पढ़ने आते । नई तालीम के सेक्रेटरी आर्यनकम जी और उनकी धर्मपत्नी आशादेवी आर्यनायकम जाईंट सेक्रेट्टरी थीं । राधी को उन्होंने अपना बेटा बना लिया था और नई तालीम का प्रिंसिपल नियुक्त किया था । आर्य नायकम सीलोन के क्रिश्चियन थे और उनका नाम विलियम्स था । आशादेवी संस्कृत की विदुषी बंगाली ब्राह्मण परिवार की थीं । दोनों पहले गुरूदेव रवींद्र नाथ टैगोर के शांतिनिकेतन में थे ।

पहले तो गांधी जी के आदेशानुसार लोगों को वर्धा से पैदल आना पड़ता , लेकिन कांग्रेस के बड़े बड़े नेता विचार विमर्श के लिये मोटर कार से आने लग गये थे । सारा दिन मिलने वाले लोगों का ताँता लगा रहता । मिनिस्टर सलाह लेने के लिये, विधायक शिकायतें सुनाने के लिये , गांधी सेवा संघ के कार्यकर्ता अपनी समस्यायें बताने के लिये , और दूसरे अपनी पारिवारिक या सामाजिक समस्यायों के निदान के लिये या निजी झगड़ों को सुलझाने के लिए आते हैं । हज़ार लोगों की हज़ार समस्याएं होती थीं । सबको दो दो मिनट का समय मिलता , गांधी जी पूरी तरह सुनते, दो शब्दों में जवाब देते , फिर पीठ पर धौंस जमाकर कहते , अब भाग जाओ !

गांधी जी को लोगों की छोटी से छोटी बातों में भी अपार श्रद्धा थी । हाँ , रात को ठहरते तो खाने का पैसा देना होता था कोठारी या मैनेजर को ! उन्हीके भतीजे नारायण दास गांधी । बनिया थे न तो ओटोग्राफ

का भी मोल देना होता था । चंदा इक्कठा करना तो कोई इनसे सीखे । इतने बड़े बड़े राष्ट्रीय आंदोलनों के लिये पब्लिक को ही पैसे देने होंगे न ?

पर विदेश से आये हुए मेहमानों को भी आश्रम के नियमों और एकादश व्रतों का पालन करना होता , सुबह शाम की सर्व धर्म प्रार्थना में भाग लेना होता । सामूहिक सफ़ाई, संडास सफ़ाई और सामूहिक भोजन होता तो सब भाग लेते । गांधी जी समय पालन और नियम पालन में बहुत पक्के थे । दिन में 56 बार घंटी बजती थी । घड़ी के सुई के साथ सबेरे 4 बजे से रात 9 बजे तक काम होता । रचनात्मक कार्यक्रमों का ट्रेनिंग ग्रांउड था सेवाग्राम आश्रम ।

भाग -17

गांधी जी का स्नेह सब पर झर झर बहता । लोगों को लगता कि उन्हीं दो मिनटों में वे उनके दिल में उतर गयें हों । सबको अपना बना लेते थे । पर दिनभर के इंटरव्यू , पत्राचार , मुलाक़ातों में एक मिनट का भी देर नहीं सहते थे । दिन में 200 पत्र लिखते थे गांधी जी ! सारे कामों का समय बंधा था और कड़ाई से पालन होता था । प्रार्थना सबेरे 4 बजे और शाम 7 बजे , भोजन 11 बजे सबेरे और शाम 6 बजे । सुबह शाम की 18 km की तेज़ सैर । इतना चले कि 79000 km भारत में कि मानो दो बार पूरी पृथ्वी की परिक्रमा ही कर दी गांधी जी ने ।इतना पतला दुबला शरीर और ग़ज़ब की आत्म शक्ति । चलते तो यूँ लगता मानो हवा में तैर रहे हों !

शादी में आये हुए रिश्तेदार हक्केबक्के होकर सुन रहे थे , दांतों तले उँगलियाँ दबा कर ! शाम की प्रार्थना से श्रीमद् भगवद गीता के 18 श्लोकों का पाठ कर , संत कवि नरसिंह मेहता के गुजराती भजन 'वैष्णव व जन तो देने कहिये जे पीड पराई जाणे रे' और रामधुन के गायन के साथ सभा समाप्त हुई । राधाकृष्ण तो गांधी जी का अनुयायी और आश्रमवासी है यह सब के समझ में आ गया था ।

अगले दिन सबेरे बैंक के रजिस्टरों से भरे गोदाम में राधाकृष्ण और कमला की अकेले में पहली मीटिंग हुई । राधाकृष्ण बोले ' मैं कैसा जीवन जीता हूँ समझ आ ही गया होगा तुम्हें । सारे काम अपने हाथ से करने होते हैं । तुम तैयार हो ? पूछा कमला से ।

वह झट से बोली 'काम क्या पैरों से करतें हैं ? हम भी तो सारे काम अपने हाथों से ही करतें हैं । और फिर यह गांधी जी का आश्रम है तो मुझे तो बहुत ख़ुशी होगी ।'

बस फिर क्या था , चट से आगे के दो दांत बाहर निकाल कर कहा देखो मेरे डेंचर ! बहन को ट्रेन में ससुराल के लिये विदा करते वक्त कम्पारट्मेंट में चढ़ाते चढाते किसी ने ऐसा घूँसा जडा़ कि सामने के दो दाँत ही टूट गये ।

कमला घबराई नहीं , सहानुभूति से कहानी सुनी । ज़्यादा बोलने वाली कन्या पहले से ही नहीं थी मेरी अम्मा कमला । फिर पूछा तुम्हारी अम्मा नहीं दिखाई दी , क्यों नहीं आईं हैं? तो क्या हुआ अय्या आये हैं न ? एक ही बात तो है! कमला ने जवाब दिया ।

राधाकृष्ण को कमला का जवाब सुनकर आश्चर्य हुआ क्योंकि उनके परिवार में उनकी अम्मा का ही राज था । जयलक्षीअम्मा से बिना पूछे कुछ नहीं होता था । कमला ने भी सुना था कि ' आमे चाला गेट्टिदी ' (वे बड़ी कड़क महिला है) । कमला को अच्छा लगा ।

उसके घर की सारी महिलायें यानि गुड्डुअव्वा और सातों अत्ता (बुआएँ) भी तो 'गेट्टिवांळु ' (साहसी और ठसकेदार) हैं । तो सास बहू की ख़ूब जमेगी , कमला ने मन ही मन सोचा और वर वधू की पहली मीटिंग

समाप्त हुई । ससुर श्रीनिवासचारलू ने आनाऊंसमेट किया और इधर महिलाओं ने झटपट पूरणपोळी या तिरूपणियारम् बनाने की प्रक्रिया शुरू कर दी । शादी की तारीख़ 27 मई 1948 को रखी गई । शादी तिरूपती में होने का निर्णय लिया गया ।

भाग -18

इस शादी की कई ख़ासियत थी । वर राधाकृष्ण के सेवाग्राम आश्रम के माँ और बाबा , आशा देवी आर्यनायकम और आर्यनायकम जी ने वधू के परिवार को आदेश दिया था कि कमला को शादी से पहले सेवाग्राम ले कर आना होगा । और दूसरा आदेश था कि सारे उपहार खादी के होगें । तीसरा की माँ और बाबा, राधाकृष्ण की शादी में आयेंगें । बाबा तो क्रिश्चियन थे इसलिए रूढ़ीवादी रिश्तेदारों में हड़कंप मच गया । क्योंकि ऐसा पहले पूरी बिरादरी में कभी भी नहीं हुआ , न सुना और न ही देखा था । किसी भी ग़ैर ब्राह्मण को पंगत में बैठाकर खाना खिलाने का तो सवाल ही नहीं उठता है । यह परंपरा के ख़िलाफ़ है , बहिष्कार योग्य है । बड़ी समस्या आ खड़ी हुई उनके बीच जो रिश्तेदार रूढ़िवादी थे और जो और जो खुली सोच के थे । परंतु सारे के सारे विद्वान और विवेकी थे । आपस में बैठ कर आसानी से समस्या का निदान भी लाये ।

राधाकृष्ण के मामा सिद्धवनहल्ली कृष्ण शर्मा गांधी भक्त थे । बचपन से ही उनका भांजा राधी और एस.एन. सुब्बाराव उनसे प्रभावित रहे थे यानि उनके चेले रहे । कृष्ण शर्मा ने ही उन दोनों को बिल्कुल बचपन से ही गांधी कार्य में लगा दिया था । राधी अत्यंत मेधावी बालक था और 12 साल की उम्र में ही मेट्रिक की परीक्षा मेरिट में उत्तीर्ण कर ली थी । माँ जयलक्षमी अम्मा ने उत्सव मनाया और सब को पकवान बना कर खिलाया । वह पाक शास्त्र में प्रवीण थीं और बहुत ही स्वादिष्ट खाना बनाती थी । सारी बिरादरी उनका लोहा मानती थी । और कमला की भावी सास तो सात बेटे और इकलौती बेटी की मां थी । वह बड़ी सुंदर और ठसकेदार महिला थी ! पूरा घर गृहस्थी को बखूबी और व्यवस्थित ढंग से चलाती थीं। और फिर, राधी तो उनकी लाड़ला बेटा उनकी पहली संतान थी । खूब सजा धजा कर रखती थी ।

अंडरएज होने की वजह से राधी को कालेज में दाख़िला नहीं मिला तो मामा ने अपने पास बुला लिया । जयलक्ष्मी अम्मा को बहुत आक्रोश आया और काफ़ी वर्षों तक मनमुटाव का कारण बन गया । इधर राधी अपने मामा के साथ हैदराबाद चला गया क्योंकि मैसूर शासन ने कृष्ण शर्मा को स्वतन्त्रता संग्राम में लोगों को बढ़ चढ़ भाग लेने के लिये लिखे लेखों के संगीन आरोप में तड़ीपार घोषित कर दिया था । वे 1939 में सेवाश्रम में तीन महिनों तक गांधी के साथ रहे थे । बहुत सुंदर वर्णन करती हुई किताब 'पंचवटी' उनके कई सारे साहित्य का उत्कृष्ट नमूना है । राधी को हैदराबाद में उनके साथ दो महिनों की जेल तक हुई थी । बस तभी से राधाकृष्ण ने ठान लिया था कि गांधी जी का दामन आखिरी दम तक नहीं छोड़ना है ।

भाग -19

कृष्ण शर्मा आर्यनायकम दंपत्ति से भली भाँति परिचित थे और शादी के समय उनकी देखरेख का ज़िम्मा अपने हाथ में ले लिया ।

कमला को वेणुगोपाल सेवाग्राम आश्रम ले कर गया । मोटी खादी की साड़ियाँ ख़रीदी गईं , ब्लाउज़ भी सीले और पेटिकोट भी । माँ बाबा के घर पर छोड़कर वेणु निकल गया । शादी की बहुत सारी तैय्यारियों का काम था , रूपयों का हिसाब किताब रखना था और भी तो बहुत सारी ज़िम्मेदारी थी । कमला ने आश्रम जीवन बड़ी आसानी से अपना लिया । वहां का खाना बिल्कुल अलग, भाषा अलग, लोग अलग । गांधी जी का आश्रम किसी चिड़ियाघर से कम नहीं था । अजीबो ग़रीब इंसान वहाँ रहते थे

। सारे प्रांतों के लोग , अलग अलग रहन सहन, चित्र विचित्र वेश भूषा पर सब खादी के वस्त्र ही थे । घंटाशाला तो बाबा माँ के घर के बिल्कुल सामने था । हर काम की घंटी बजती ।

राधाकृष्ण सामने के आफिस में दिन भर काम करते और शाम को दोनों जन घूमने निकलते । बड़े से परिसर में तो घूमने की बहुत जगहें थीं । थोड़ा आड़ देखकर बैठकर बतिया लेते तो शाम ढलते ही बाबा कंदील पकड़ कर ढूँढने निकलते । और कोना कोना छान मारते । दोनों को साथ बैठा देख कमला को वापस चलने को कहते । घर पर छोटी मीता या मित्तू नई होनेवाली सुंदर सी कमला भाभी से खूब लाड़ लड़ाती । और माँ - बाबा अपने गबरू जवान बेटे राधाकृष्ण पर जान छिड़कते । अभी कुछ महिनों पहले ही उनका बडा बेटा आनंद दवाई के ओवरडोज से जान खो बैठा था । ऐसे समय राधाकृष्ण का वहाँ आना उनके लिये वरदान ही साबित हुआ था । बहुत ही प्यार उँड़ेलते थे ।

इधर बेंगलूरू में घर वालों में घोर निराशा छा गई थी । राधी के पढ़ लिख कर डिग्री हासिल करने के बाद नौकरी मिलने पर घर की आर्थिक स्थिति बहुत सुधर जाती । पर वह तो लौट कर घर ही नहीं आया और ना ही बहुत तरह से समझाने के बावजूद आने को तैयार हुआ । पिताजी डर गये कि आश्रम जीवन वरण किया है तो कहीं संन्यासी ही न बन जाये ! बार बार पत्र लिख कर विवाह कराने को कहते पर राधी ने साफ़ मना कर दिया था । अब जब रहा नहीं गया तो पिताजी श्रीनिवासाचारलू सेवाग्राम आश्रम पहुँच गये । बड़ा मनुहार किया और फिर साथ लेकर ही कर्नूल लौटे थे ।

और अब कमला को पाकर भूल ही गये राधाकृष्ण ! चर्चा के हर विषय में बहुत रूचि लेती , अपने सुदृढ़ विचारों से दलीलें देती , संस्कृत का अच्छा ज्ञान था , संगीत बहुत पसंद था । और स्वास्थ्य के बारे में तो खूब जानकारी रखती , जो कमला के भावी वर को बिल्कुल नहीं थी ।बेहद लापरवाह और तरह तरह के खाने के शौक़ीन भी थे । माँ के हाथों का पकाया खाने का स्वाद जो पड़ गया था ।

भाग -20

कमला को राधाकृष्ण ने शादी के पहले ही दो चार काम भी सौंप दिए थे । पहला तो यह कि ससुराल में जितनी भी शादियाँ हो रहीं हैं , उनमें मेरी बजाय तुम्हें जाना होगा । तो कमला राधाकृष्ण की ओर से बहुत सारी शादियों में उपस्थित रही। खूब नए नए दोस्त बनाईं । बहुत लोगों से परिचित हुई। सबने उन्हें प्यार से अपनाया । राधी को सब बहुत मानते थे । अब सब कमला के भी मित्र बन गए । छोटे देवर श्रीप्रकाश , श्रीवत्सा , श्रीहर्षा, मेघश्याम , श्री कृष्णा और बड़ी ननद पद्मावती सारे के सारे कमला के साथ साथ रहते । भावी सास - ससुर का वरद हस्त हमेशा सर पर रहता । ख़ूब मज़े से शादियों में ख़ुशियाँ मनाई । लोग थोड़ा आश्चर्य चकित भी होते की कितना बोल्ड और अपनी उम्र के हिसाब से कितनी परिपक्व है कमला । पाटी (नानी) साथ गईं थीं जो कमला को बहुत प्यार करती थी । अम्मा 'पद्मावती' उनकी सबसे लाड़ली बेटी जो थी ।

राधाकृष्ण ने कमला को दूसरा काम दिया था अपने भावी ससुराल में एक महिने रहने का । तो पाटी और कमला बेंगलूरू गये। वहाँ की परंपरा, परिवेश, माहौल, रिश्ते, खान - पान, उठना -बैठना सब कुछ अलग सा लगा । अपने पिताजी को घर पर अलग सा परिवेश था , स्वछंदता थी , स्वास्थ्य और आयुर्वेद की निरंतर चर्चा और उपचार होता थे । इतना ही नहीं यहाँ तो घर भर लड़के ही थे । एक ही महिला थी , कमला की भावी सास जयलक्ष्मीअम्मा ! लड़के घर का सारा काम करते क्योंकि बड़ी ननद पद्मावती का विवाह हो चुका था और वह अपने ससुराल में थी । सिर्फ़ प्रसूति के लिये आती तो इस समय भी आईं हुईं थी ।

गोठ में गाय बंधी हुई थी पर कोई सेवा नहीं करता था और ना ही घर में दूध का इस्तेमाल होता था । खूब दुधारू प्यारी सी नंदिनी गाय बस गंदगी में पड़ी रहती और जुगाली करके जैसे तैसे समय काटती । कमला ने पहले तो गाय के गोठ की सफ़ाई की, गाय को नहलाया धुलाया । दूध निकाला , गर्म किया और घर भर को ग्लास भर भर ताज़ा गाय का दूध पिलाया और आदत भी डलवा दी । कुछ स्वास्थ्य की चर्चा शुरू की और भावी सास को पौराणिक कथायें पढ़कर बताने में लग गई । सबने कमला के वहाँ होने का आनंद उठाया । इस बीच ससुराल के घर पर ननद का प्रसव हुआ जिससे कमला काफ़ी घबरा गई थी क्योंकि पहली ही बार प्रसव पीडा से परिचय हुआ था ।

भाग-21

हैदराबाद का मौसम सूखा होता है । खूब गर्मी पड़ती है । पर बेंगलूरू में हमेशा रिमझिम बरसात और एसी जैसी ठंडक होती हैं । गीला गीला सा समां बडा़ सुहावना लगता है इसलिये लोगों को छोटे छोटे डोज़ में कई दफ़ा काफ़ी पीने की आदत है । कमला को एक ही बार अच्छी लगती थी काफ़ी । पर यहाँ के मौसम से आस्थमा का ज़बरदस्त अटैक पडा ।

मैसूर में अस्पताल में महिने भर रहना पड़ा । डॉक्टर दीक्षाचारलु बहुत व्यथित हुए । मैसूर में राधी के बड़े ताऊ राळपल्ली अनंतकृष्ण शर्मा मैसूर महाराज के आस्थान विद्वान थे । बहुत बड़ा मकान , कई नारियल के पेड़ और बाग़ान थे । संगीत के विद्वान और संस्कृत के धुरंधर पंडित । बहुत मान सम्मान था । वायलिन के ज्ञाता थे तो घर में ही उनके शिष्य गण रहते थे । पहले तो भाई श्रीनिवासाचारलु भी परिवार सहित साथ वहीं रहते थे । राधाकृष्ण। का बचपन वहीं गुजरा था । श्रीनिवासाचारलु पड़ोस में रहने वाले डॉ सर्वेपल्ली राधाकृष्णन के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाए थे । राधी को खूब प्यार करते थे । मैसूर के रामकृष्ण मिशन के स्वामी रंगनाथानंद के गोद में खेलता था बालक राधी ।

कमला अस्पताल से मैसूर के घर पर रहने आई तो भावी बडे ससुर और सास रुक्मणी अम्मा के पास रहीं । राळपल्ली अनंतकृष्ण शर्मा से खूब शास्त्रार्थ किया। सास का रसोई में हाथ बँटाया क्योंकि खाने पर पचास साठ लोग तो रोज़ाना रहते ही थे । बस बाग से नारियल तोड़ कर लाना होता, और नारियल की चटनी और पपीते का सांबार बनता बड़े से 'जोडतपिला ' (दक्षिण में प्रचलित कांसे का सिलिड्रिकल बड़ा बर्तन) भर कर । फिर पंगत में खिलाया जाता । कमला के स्वास्थ्य में तेज़ी से सुधार आया और वेणू आकर पाटी (नानी) और बहन कमला को लेकर रायदुर्ग वापस पहुँचा । शादी के लिये बस चंद ही दिन थे ।

फिर घराती वधू कमला को लेकर तिरूपती के लिए निकले। वहाँ से बराती वर राधाकृष्ण को लेकर पहुँचे । रस्मों रिवाज के मुताबिक़ शादी हुई । लेन देन का कुछ मसला ही नहीं था । फिर भी कमला को अम्मा ने चाँदी के खूब बर्तन दिए । सोने के गहने खूब दिए । सारे के सारे सास के पास रखवा दिये । बाद में सास ने आने वाली बहुओं को यहीं चाँदी सोना गला कर बाँट दिया। कमला को मायके का कुछ भी स्त्री धन नहीं मिला । खादी के कपड़ों का तोहफ़े दिए गये और बड़ी सादगी और शालीनता से कमला और राधाकृष्ण का विवाह संपन्न हुआ ।

बस समस्या आई तो पंगत में खाने के समय । ताऊ राळपल्ली अनंतकृष्ण शर्मा भड़क गये के पंगत में क्रिश्चियन आर्यनायकम नहीं बैठ सकते हैं । आशा देवी तक तो ठीक था , कुलीन ब्राह्मण परिवार की थीं , पर इन के पति को साथ नहीं बिठाया जायेगा । सन्नाट सा छा गया तो मामा कृष्ण शर्मा ने झटपट टेबल का इंतज़ाम कर दिया । वैसे भी आर्यनायकम जी को पालथी मार कर बैठने में थोड़ी घुटनों में तकलीफ़ होती थी । वे रिश्तेदारों की समस्या से वाक़िफ़ थे और मामला सुलझ गया । सारों के चेहरे उतर गये थे । इस घटना के 25 सालों के बाद जब ताऊ ससुर काफ़ी वृद्ध हो गए थे तो अपने उस व्यवहार के लिये

उन्हें बहुत पश्चाताप हुआ था । उन्होंने कमला से हाथ जोड़ कर माफ़ी माँगी और उसके कुछ समय बाद परलोक सिधार गये

शादी में ख़र्चा आया कुल 3000 रूपये । हांलाकि आदिलाबाद में शादी का खर्चा आधा होता और सुविधाजनक भी रहता । अस्पताल के पूरे कर्मचारियों का भी काम में सहयोग मिलता ।

शादी के बाद सारे लोग पैदल चल कर पहाड़ चढ़ कर बालाजी वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शनार्थ गये । पर इस शादी के बाद वेणुगोपाल के जीवन में बहुत आमूल परिवर्तन हुए ।

भाग-22

नवविवाहित दंपति , कमला और राधाकृष्ण सेवाग्राम आश्रम कुछ समय के बाद ही पहुँचे । भव्य स्वागत हुआ और आश्रम के बृहत् परिवार ने अपना लिया । कमला को तो आश्रम जीवन बहुत पसंद आया । सब लोग कमला भाभी के नाम से पुकारते थे और राधाकृष्ण को गुरूजी । छात्रों से घिरे रहते थे हमेशा । और दोनों को आश्रम का अभिन्न अंग बनने में बिल्कुल देर नहीं लगी । कुछ ही दिन बाद पता लगा कि आदिलाबाद ज़िले में रज़ाकारों का भंयकर उत्पात चल रहा है ।

डॉ दीक्षाचारी के परिवार को मार डालने और घर जला देने की लगातार धमकियाँ दी जा रही थी । कमला बहुत व्यथित हुई । उसकी अम्मा की तबियत इन दिनों ख़राब रहती थी । सर दर्द और चक्कर बहुत आते पर उन पर ध्यान बिल्कुल न के बराबर देते थे , अय्या । सारी ज़िम्मेदारी वेणू के कंधों पर थी । बाक़ी बच्चे तो अभी छोटे छोटे ही थे । बड़ों की चिंता यही थी कि बच्चों को कैसे सुरक्षित रखें । ऐसे में वेणू ने एक सलाह दी । अब तक तो उसे आदत सी पड़ गई थी सारी बातें जाँच कर निर्णय लेने की ।

आदिलाबाद में देशपांडे के मकान में पूरा परिवार रहता था । तो वेणू की सलाह थी कि निज़ाम स्टेट का बोर्डर पार कर सेवाग्राम आश्रम चले चलते हैं । अब तो वहाँ कमला और राधाकृष्ण बावा (जीजाजी) की गृहस्थी है तो बच्चे सुरक्षित रहेंगें । बस फिर क्या था , डॉ दीक्षाचारी के पाँच बच्चे , देशपांडे के चार बच्चे एक स्वामी जी के हवाले कर दिये गये । और दलों की टोली घर से निकल पड़ी , पैदल । आदिलाबाद के क़रीब 10 किलोमीटर उत्तर दिशा में पिन गंगा नामक गोदावरी नदी की एक ट्रिब्यूटरी बहती थी जो निज़ाम स्टेट और बंबई की सीमा थी । बस नदी के साथ साथ ही देशपांडे की पैतृक ज़मीन थी ।

रजा़कार नदी की चौकसी और चैकिंग करते कि कोई सीमा तो नहीं लांघ रहा है ? वेणू की योजना के अनुसार चुपके से नदी लांघनी थी और बोर्डर पार कर सेवाग्राम पहुँचना था । पकड़ा गये तो ख़ैर नहीं । बहुत बड़ा रिस्क लिया था इस 19 साल के नवजवान ने !

सारी बच्चा पार्टी नदी किनारे तक के गाँव पहुँचीं । देशपांडे ने अपना आदमी भेजा था कि सारी तैय्यार ठीक ठीक चले ।

शुक्ल पक्ष के नये चाँद की मध्यम- मध्यम रोशनी में रात के अंधेरे में सामान उठाये एक पड़ाव तक पहुँचे । नाव से इस पार से उस पार गये देशपांडे के साथ । थकान से रो पड़तीं थीं छोटी बहनें, सुलोचना और वसुंधरा । अभी 8 साल की ही तो थी वसुंधरा । तो 10 साल की सुलोचना ढाँढस बँधाती की कमलक्का के पास जल्दी से पहुँच जायेंगें हमलोग । फिर अपने नये बावा कितना प्यार करतें हैं तुमसे ! तुम तो उनकी लाड़ली सुदंरी हो । हाँ , यह नाम राधाकृष्ण बावा का ही दिया हुआ था ।

देशपांडे के कुशल नेतृत्व की वजह से उनके रिश्तेदार के घर यह पल्टन पहुँची । और रात के विश्राम किया । अगले दिन 20 किलोमीटर दूर स्टेशन के लिये निकले। वह स्टेशन बल्लारशाह और वर्धा के बीच का है । दो दिन का खाना था साथ में वही खा कर सबने गुज़ारा किया । स्टेशन मास्टर ने कहा कि यहाँ ट्रेन नहीं रूकती है । इस मालगाड़ी में बैठ जाओ अगले स्टेशन में उतर जाना और वहाँ से वर्धा के लिये ट्रेन ले लेना । वह हमारी बहादुरी का क़ायल हो गया था सारी कहानी सुनकर ।

करोना काल के मज़दूरों का त्रासदी याद दिला दे रही है कमला के भाई बहनों का आदिलाबाद से सेवाग्राम तक पहुँचने का सफ़र । रोंगटे खडा़ कर दे रहा है उनके बारे में यूँ लिखना । बहुत दिल उदास हो जा रहा है ।

भाग -23

अगले दिन शाम को वर्धा के लिये ट्रेन मिली और दोपहर चार बजे वर्धा जंक्शन पहुँचे । सारा खाना ख़त्म हो गया तो आमलेट ब्रेड ख़रीद कर पहले भरपेट खाया । ताँगा भाड़े पर लेकर चल दिये सीधा सेवाग्राम आश्रम । क़रीब 8 किलोमीटर का रास्ता तय करके शाम के घुप्प अंधेरे में पहुँच कर एक बड़े से हाल में सामान रख दिया । बहुत ही शांत और अंधेरी शाम थी जून के महिने की, तो बच्चोंको समझाया कि आश्रम में बापू कुटी के सामने शाम की प्रार्थना चल रही होगी बिल्कुल शोर मचाये बग़ैर वहाँ जाना है ।

सब पहुँचे प्रार्थना भूमि में और बाक़ी बच्चों के साथ चुपचाप बैठ गये । सोचा कि किसी भी बड़ों ने नहीं देखा होगा । पर सब ने देखा और खूब सावधानी से देखा ।

प्रार्थना पूरी समाप्त हुई और दिन भर के काम की चर्चा शुरू हुई । वेणू की बारी आई तो उस ने परिचय देते हुये पूरा क़िस्सा सुनाया दिया और बताया कि खाना खा कर आये थे । सबको समझ में आया कि ये लोग शरणार्थी हैं । उस रात उन सब ने उसी बड़े हाल में गुज़ारी ।

कमला और राधाकृष्ण बावा अभी तक सेवाग्राम पहुँचे नहीं थे । बच्चों का मराठी मीडियम स्कूल में दाख़िला हुआ ।

आज़ादी मिल कर क़रीब एक साल बीत गया था और देश समस्याओं में पूरी तरह घिर गया था । सबसे बड़ी समस्या तो पंजाब से आये शरणार्थियों की थीं । देश का विभाजन तो लोगों का विभाजन था । कश्मीर के साथ साथ 583 प्रिस्ली स्टेट्स की भी समस्या थी । सरदार पटेल ने बड़ा फ़ैसला लिया और सितंबर 13 को निज़ाम स्टेट पर पुलिस एक्शन लिया गया । जब तक लोगों को पता चलता भारत सरकार ने सितंबर 17 को पूरा क़ब्ज़ा कर लिया था । निज़ाम ने सरेंडर किया और हैदराबाद स्टेट आजा़द भारत का भाग बन गया ।

देशपांडे सेवाश्रम पहुँचें और अपने बच्चों को लेकर चले गये ।डॉ दीक्षा चारी के बच्चे वहीं रह कर नई तालीम की शिक्षा पाने लगे । वेणू को तो आज तक सिर्फ़ एक ही संस्था मालूम थी और वह थी - आर्य समाज । पुरातन सनातन धर्म का उत्थान करना उसका उद्देश्य था । वह तो अन्याय , ग़ुलामी और धर्म परिवर्तन का सामना हिंसा से करना सिखा रहे थे ।

कमला के बड़े भाई वेणू को आर्य समाज की पूरी जानकारी तो नहीं थी पर हर कार्यक्रम में भाग लेता था । अब कमला की राधाकृष्ण के साथ शादी के बाद समझ बढ़ी की राधाकृष्ण गांधियन प्रिंसिपलस् के अनुयायी हैं । गांधी जी के कहने पर रचनात्मक कार्यक्रमों में भाग लेने सेवाग्राम आये हैं ।

भाग 24

अब डॉक्टर दीक्षाचारी के एक को छोड़कर छहों बच्चे गांधी जी के बताये रास्ते पर चलने लगे थे । समय के साथ धीरे धीरे सेवाग्राम आश्रम की सारी गतिविधियों से , विभिन्न संस्थाओं से परिचय हुआ । संत विनोबा भावे का सानिध्य मिला । जमनालाल बजाज जी का मार्गदर्शन मिला । संत विनोबा भावे ने सेवाग्राम के ही नज़दीक पवनार आश्रम स्थापित किया था । गांधी जी के आश्रम से रचनात्मक कार्यों के द्वारा ग्रामों के सर्वांगीण विकास का रास्ता प्रशस्त हुआ । बहुत सारे विषयों के एक्सपर्टस जुटाये गये । संस्थायें बनीं, रिसर्च चला । आश्रम के नाम से लोग कुछ और ही समझते थे । लोगों के मन में वेदों और उपनिषदों के काल की आश्रम की परिकल्पना दिमाग़ में उभर कर आती थी। जहां गुरू और शिष्य हवन आदि करतें, ज्ञान वर्धन होता होगा । चारों तरफ़ वन , तालाब और झरनें होंगें । आश्रम में ऋषि , मुनि , योगी आदि जन होंगें । जैसे सिनेमा में आम तौर पर दिखाया जाता वैसा ही कुछ मन में आता था लोगों के ।

परंतु गांधी जी का आश्रम तो बिल्कुल अलग सा था । वह तो अहिंसा की वैज्ञानिक प्रयोगशाला थी । झोपड़ियाँ, प्रार्थना भूमि, खेत , और फलों के बाग़ीचे थे वहाँ । डॉक्टर दीक्षाचारी के बच्चों की नई तालीम स्कूल में शिक्षा आरंभ हुई । तीन स्तर के कक्षायें थीं । आनंद निकेतन, उत्तम बुनियादी और बेसिक ट्रेनिंग कालेज । सारे भारत से शिक्षाविद और शिक्षक सेवाग्राम आश्रम आते थे । उनको चरखा कताई , खेती , गो -पालन , गांधी दर्शन और नई तालीम का का ज्ञान कराया जाता था । डॉक्टर ज़ाकिर हुसैन इस संस्था के अध्यक्ष थे और आर्यनायकम और आशा देवी आर्यनायकम सचिव थे ।

इस प्रकार सेवाश्रम आश्रम के साथ कई संस्थायें भी चल रहीं थीं ।

कस्तूरबा गांधी के जाने के बाद कस्तूरबा ट्रस्ट बना और शातां बाई नारूलकर सेवाग्राम में उसकी संरक्षक बनीं । महिलाओं का ग्राम सेविका के तौर पर प्रशिक्षण होता । अस्पताल भी बनाया गया । चरखा संघ में कताई , बुनाई, सिलाई प्रशिक्षण होता था । सामूहिक सफ़ाई, सामूहिक प्रार्थना, सामूहिक कताई और सामूहिक भोजन होता था । ज्वार की रोटी , पतली दाल , मठ्ठा , नमकीन दलिया और उबली सब्ज़ियाँ खाने में मिलतीं । सप्ताह में दो बार बिना नमक का भोजन और सप्ताह में एक दिन बिना अनाज का भोजन मिलता था ।

बजाज वाडी में खादी के कपड़ों की बिक्री होती छती और मगनवाडी में ग्रामोद्योग का काम होता । डॉक्टर कुमारस्वामी के निर्देशन में प्रकृति में मिलने वाले ऊर्जा के स्रोत जैसे सूर्य , पानी, हवा आदि की ऊर्जा से कई सारे काम होते ।

भाग -25

मगन चूल्हा , मगन दीप , गोबर गैस आदि तकनीक बने जिसमें अपराप्रियेट टेक्नोलॉजी की ट्रेनिंग दी जाती थी । आज के संदर्भ में तो बहुत उपयोगी तकनीकें हैं सरल , सहज जीवन और पर्यावरण के संरक्षण के लिये । निसर्ग के साथ जीने के लिये । बजाज वाडी में गो- शाला थी , नागरी प्रचारिणी सभा थी, कुष्ठ निवारण केंद्र और हरिजन प्रेस का आफिस भी था जिसे किशोरीवाल मशरूवाला देखते थे

पवनार संत विनोबा भावे का आश्रम था । वर्धा और नागपुर के रेलवे ट्रैक के पास । संत विनोबा भावे महान योगी थे, विद्वान थे ,ब्रह्म ज्ञानी थे, बहु भाषी थे , संस्कृत के प्रचंड ज्ञाता थे , आध्यात्मिकवादी

वैज्ञानिक थे , टीचर थे, एकांत प्रिय थे, और स्वावलंबी थे । आश्रमवासी खुद मेहनत कर अपना जीवन ब्रह्म विद्या के ज्ञानोपार्जन मे लगातें थे । श्रीमद् भगवद गीता के शब्दों में उनका जीवन कुछ इस प्रकार का था :

आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते।
योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते ‘।।6.3।।

(जो योग(समता)में आरूढ़ होना चाहता है ऐसे मननशील योगीके लिये कर्तव्यकर्म करना कारण है और उसी योगारूढ़ मनुष्यका शम (शान्ति) परमात्मप्राप्तिमें कारण है।)

संत विनोबा भावे प्रथम सत्याग्रही भी थे । गिरफ्तार करके धुलिया जेल भेजा गया । वहीं पर हर रविवार को मराठी भाषा में क़ैदियों के लिये गीता प्रवचन देते थे ।

गांधी जी के एकादश व्रतों को पद्य में बांधा था विनोबा जी ने रोज़ सबेरे और शाम की सर्व धर्म प्रार्थना में गाई जाती थी:

अहिंसा, सत्य, अस्तेय , ब्रह्मचर्य , असंग्रह ,
शरीर श्रम , अस्वाद , सर्वत्र भय वर्जन ।
सर्व धर्म समानत्व, स्वदेशी , स्पर्श भावना,
विनम्र व्रत निष्ठा से ये एकादश सेव्य है ।।

जब कमला और राधाकृष्ण सेवाग्राम लौटे तो ढीले ढाले , तेलुगू में ‘लडुम - बुडुम’खादी के कपड़ों में छोटे भाई बहन भाग कर ख़ुशी ख़ुशी बहन कमलक्का और प्यारे बावा के गले लग गये । मेरी माँ कमला का परिवार भी दहेज में साथ आ गया था । अब तो वही दोनों , इन सारे बच्चों के लोकल गार्जियन बने और सारी ज़िंदगी बने रहे !